CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Research Paper

Received on 22.05.2022
Reviewed on 23.05.2022
Accepted on 27.05.2022

शिक्षकों में कार्यजनित तनाव का उनकी कार्यकुशलता पर प्रभाव का अध्ययन

* अंशुल श्रीवास्तव
** डॉ0 विशाल उपाध्याय

मुख्य शब्द - *शिक्षक, कार्यजनित तनाव, तनाव, कार्यकुशलता, कक्षागत व्यवहार आदि*

सार–संक्षेप

कार्यजनित तनाव कार्य स्थल पर उत्पन्न तनाव या नौकरी से उत्पन्न तनाव है। यह आमतौर पर तब उत्पन्न होता है, जब कार्य स्थल की आवश्यकताओं एवं व्यक्ति की योग्यता के बीच असंगतता होती है।[1] शिक्षकों का कार्यजनित तनाव एक अलग प्रकार का व्यावसायिक तनाव है। यह तब उत्पन्न होता है जब शिक्षक अप्रिय एवं प्रतिकूल परिस्थितियों का अनुभव करता है और शिक्षकों में तनाव, निराशा, क्रोध एवं अवसाद की भावना पैदा करती है। उपयुक्त कार्यदशाओं एवं सेवा संतुष्टि के अभाव में अच्छे शिक्षकों की कार्यकुशलता भी प्रभावित होती है। शिक्षकों की कार्यकुशलता को प्रभावित करने वाले कारकों में एक प्रमुख कारक शिक्षकों की कार्यजनित दशाऐं हैं। अक्सर देखा जाता है कि शिक्षकों के कार्य आवंटन एवं प्रशासन सम्बन्धी नीतियों के लिए सरकारों के पास ठोस एवं पारदर्शी कार्ययोजना का अभाव होता है। शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के कार्य पक्षपातपूर्ण एवं अनिवार्य तरीके से आवंटित कर दिये जाते हैं, जिसके फलस्वरुप उनकी कार्यकुशलता प्रभावित होती है। वर्तमान समय में बहुधा यह देखने में आया है कि वर्तमान शिक्षक अपने मूल कार्य शिक्षण एवं अन्य कार्यों के मध्य सामंजस्य नहीं बैठा पा रहे हैं। जिससे उनकी मनःस्थिति में विभिन्न प्रकार के विकार उत्पन्न होते हैं। मनःस्थिति एवं परिस्थिति के मध्य असंतुलन एवं असामंजस्य के कारण शिक्षक विभिन्न प्रकार के तनावों से ग्रसित हो रहे हैं। जिसका सीधा–सीधा प्रभाव शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। शिक्षकों में विभिन्न कारणों से उपजे तनाव से मन अशान्त, भावना अस्थिर एवं शरीर की अस्वस्थता जैसी विभिन्न प्रकार की स्थितियाँ पैदा हो रही हैं। जिनसे शिक्षक की कार्यक्षमता एवं विद्यार्थियों के साथ उसका व्यवहार पूरी तरह प्रभावित हो रहा है।

[1] https://www.iea.cc/congress/2015/1332.pdf

शिक्षक एक बाग के उस माली के समान होता है, जो उस शिक्षार्थी रुपी पौधे को सींचता है, तथा उनकी देखभाल करता है। अनेक व्यक्तियों का निर्माण करने वाला शिक्षक केवल मात्र व्यक्ति ही ना होकर अपने आप में पूरी एक संस्था होता है। किसी दूसरे देश की तुलना में भारत में शिक्षा का स्तर अध्यापक की योग्यता और उसके गुणों पर निर्भर करता है। शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए चाहे जो भी साधन अपनाये गये हों उनसे कुछ भी लाभ नहीं उठाया जा सकता। यदि अध्यापक में आवश्यक बौद्धिक और व्यावसायिक योग्यतायें नहीं हैं। यह स्पष्ट है कि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में एक संस्थान की सफलता उसके अध्यापकों की योग्यता और और गुणों पर निर्भर करती है।

प्राचीन काल में बालकों को शिक्षा गुरुकुलों में दी जाती थी, वर्तमान समय में गुरुकुलों का स्थान विद्यालयों ने ले लिया है। इन विद्यालयों में शिक्षकों द्वारा बालकों को शिक्षा प्रदान की जाती है। आज शिक्षक पर केवल शिक्षा प्रदान करने का ही उत्तरदायित्व नहीं है बल्कि अनेक अन्य कार्य जैसे :– जनगणना कार्य, नामांकन कार्य, मिड–डे मील कार्य, टीकाकरण में सहयोग, बूथ लेवल ऑफिसर (B.L.O.) का कार्य आदि विभिन्न प्रकार के कार्य शिक्षकों को करने पड़ रहे हैं। अधिक कार्य दबाव के कारण शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कुप्रभाव पड़ रहा है, जिससे तनावग्रस्त होने से अध्यापन कार्य के प्रति उनकी अरुचि बढ़ती जा रही है।

शिक्षक शिक्षा के उद्देश्यों को तभी प्राप्त कर सकता है, जब उसका शिक्षण प्रभावशाली हो। आज हमारी शिक्षा का स्तर गिरता जा रहा है। इसका मूल कारण विभिन्न प्रकार के तनावजनित कारणों से शिक्षक का तनाव में रहना है, जिसके कारण शिक्षक की कार्यकुशलता पूर्णतः प्रभावित हो रही है। अध्यापन कार्य केवल मेहनत वाला कार्य ही नहीं है, बल्कि यह तनाव देने वाला कार्य भी है। विद्यालय सुधार प्रयास का दबाव, अपर्याप्त प्रशासकीय समर्थन, खराब विद्यालयी कार्य परिस्थितियाँ, कम वेतन, कार्य का समय अधिक, विद्यालयी निर्णयन प्रक्रिया में सहभागिता का अभाव, कागजी कार्यवाही का बोझ, संसाधनों की कमी एवं शिक्षण कार्य के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के कर्त्तव्यों का निर्वहन करना आदि जिनके कारण शिक्षक अपने जीवन के भँवर में स्वयं को डूबता महसूस कर निरन्तर तनाव में रहता है, जिससे वह अपने आपको कक्षागत परिस्थितियों में भी असहज महसूस करता है।

समस्या का परिचय

तनाव को सर्वप्रथम 1936 में हैन्स शैले ने जीवन विज्ञान एवं मनोविज्ञान के क्षेत्र में परिभाषित किया। व्युत्पत्ति की दृष्टि से स्ट्रेस (Stress) तनाव शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द "Stringer" से हुई है, जिसका अर्थ है – "draw tight". जिसका अर्थ होता है :– किसी शारीरिक कष्ट, यंत्रणा, कमी या दर्द का अनुभव करना। पन्द्रहवीं शताब्दी में इसे "दबाव" या "मनोवैज्ञानिक तनाव" (Psychological Strain) कहा जाता था।

तनाव को परिभाषित करना एक अत्यन्त जटिल मामला है, जो कि विभिन्न विशेषज्ञों के बीच निरन्तर बहस का विषय है। जब वातावरण की माँग व व्यक्ति की क्षमताओं में अपर्याप्त असंतुलन उत्पन्न हो जाता है या व्यक्ति पर्याप्त रुप से प्रतिक्रिया करने में असमर्थ महसूस करते हैं तो उत्पन्न परिस्थितियों का सामना करने के लिए जीव में एक प्रतिक्रिया सक्रिय होती है। जिसमें माँग का क्षेत्र, व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषतायें और व्यक्ति का परिस्थितियों से मुकाबला करने के स्त्रोत सम्मिलित हैं। तनाव शब्द का सम्बन्ध उस अनुक्रिया से है, जो हम ऐसी परिस्थितियों का सामना करते समय करते हैं, जो हमें किसी ना किसी रुप में कोई क्रिया करने, परिवर्तित होने या समायोजित होने के लिए बाध्य करती है, ताकि हम अपनी स्थिति को बनाये रख सकें। तनाव किसी प्रकार की माँग या अपेक्षा के प्रति हमारा अनुक्रिया करने का ढ़ंग है। विद्यालयी परिवेश में अध्यापक और विद्यार्थी तनाव को अपने–अपने परिप्रेक्ष्यों में लेते हैं। विद्यालय सुधार प्रयास का दबाव, अपर्याप्त प्रशासकीय समर्थन, खराब कार्य परिस्थितियाँ, विद्यालयी निर्णयन प्रक्रिया में सहभागिता का अभाव, कागजी कार्यवाही का बोझ तथा संसाधनों की कमी ये सभी ऐसे कारक हैं, जो तनाव के कुछ कारण हो सकते हैं।

विज्ञान की भाषा में तनाव को शरीर की किसी समस्थिति में विघटन के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इसे भावनात्मक या शारीरिक खतरों के लिए उचित रूप से प्रतिक्रिया देने के लिए किसी जीव की विफलता के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है। तनाव को निम्न रूप में परिभाषित किया जा सकता है :– A Particular interaction between the person

and the environment, appraised by the person as being taxing or exceeding his or her personal resources and as a consequence, disrupting daily routines. (Lazarus & Folkman, 1984).[2]

शिक्षकों में कार्यजनित तनाव

कार्यजनित तनाव कार्य स्थल पर उत्पन्न तनाव या नौकरी से उत्पन्न तनाव है। यह आमतौर पर तब उत्पन्न होता है, जब कार्य स्थल की आवश्यकताओं एवं व्यक्ति की योग्यता के बीच असंगतता होती है।[3] शिक्षकों का कार्यजनित तनाव एक अलग प्रकार का व्यावसायिक तनाव है। यह तब उत्पन्न होता है जब शिक्षक अप्रिय एवं प्रतिकूल परिस्थितियों का अनुभव करता है और शिक्षकों में तनाव, निराशा, क्रोध एवं अवसाद की भावना पैदा करती है। जो कि शिक्षक के काम के बाद पैदा होती है।[4] वर्तमान में शिक्षण काफी तनावपूर्ण व्यवसाय है। जिसमें विभिन्न प्रकार की चुनौतियों के साथ काफी प्रकार के तनाव कारक सम्मिलित होते हैं। शिक्षण के पेशे में तनाव शिक्षकों की गुणवत्ता को अवरुद्ध करता है और वहीं भारी काम का बोझ, आपस में संचार की कमी और विद्यालय में एवं बाहर सहकर्मी शिक्षकों/कर्मचारियों, विद्यार्थियों, परिवार के सदस्यों या वित्तीय कारण शिक्षकों के दिमाग में कष्ट उत्पन्न करते हैं। शिक्षकों का तनाव शिक्षकों के मन और जीवन की शांति को नष्ट करता है। यह उनके काम के प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। एक शिक्षक द्वारा अनुभव किये जा रहे तनाव को शिक्षकों के द्वारा अप्रिय एवं नकारात्मक भावनाओं जैसे :– क्रोध, चिन्ता, तनाव, अवसाद या दुश्चिन्ता के रुप में परिभाषित किया जाता है। जो कि शिक्षकों के कार्य को नकारात्मक रुप से प्रभावित करते हैं।

शिक्षक प्रतिदिन उच्च स्तर का तनाव अनुभव कर रहे हैं। उनके कार्य क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के तनाव कारक उपस्थित हैं, जैसे– कक्षा भार, प्रशासन, कक्षा आकार, भूमिका अतिव्यापन एवं भूमिका द्वन्द्वता आदि। तनाव युक्त शिक्षक नकारात्मक आत्म धारणा, नकारात्मक जीवन अनुभव, कम मनोबल एवं जीवन मूल्यों के निम्न रखरखाव से गुजर रहे हैं। Teaching is the profession where most of the teachers have been considered as under chronic stress or in the process of burnout or suffering from depressing symptoms (Boyle et al.,1995)[5]

शिक्षकों में तनाव कारक

विभिन्न प्रकार के शोधों से यह पाया गया है कि शिक्षकों में तनाव के निम्न मुख्य कारण हो सकते हैं, जो कि निम्न हैं

(चित्र 1.2) :–

[2] https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC2904627/
[3] https://www.iea.cc/congress/2015/1332.pdf
[4] https://www.scirp.org/(S(czeh2tfqyw2orz553k1w0r45))/reference/ReferencesPapers.aspx?ReferenceID=1850023
[5] https://www.researchgate.net/publication/15472455

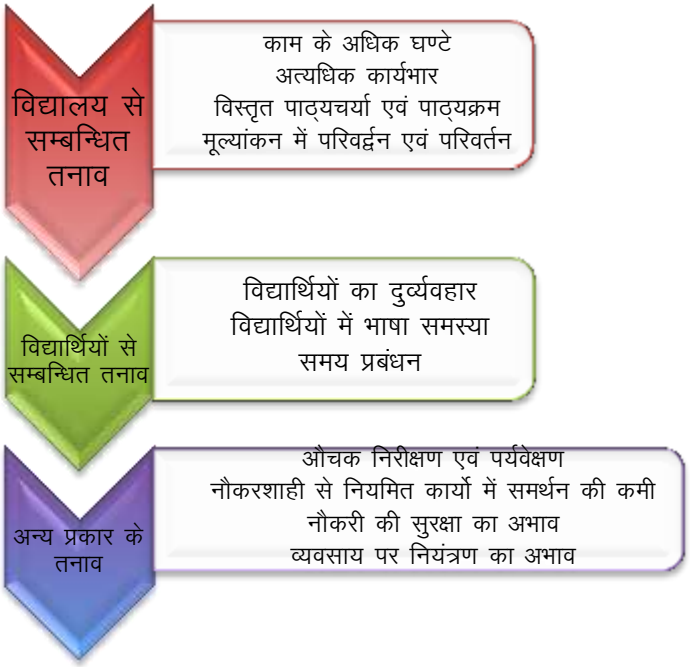

वे मूल कारक जिनके कारण तनाव उत्पन्न होता है, तनाव कारक (Stressors) कहलाते हैं। ये तनाव कारक विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। विभिन्न प्रकार के शोध अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि विभिन्न प्रकार के तनाव कारक को दो भिन्न – भिन्न प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है:– 1. संगठनात्मक कारक 2. जनसाँख्यिकी कारक या चर

संगठनात्मक कारक :– वे कारक, जो एक संगठन से सम्बंधित होते हैं, और कर्मचारियों के मध्य अस्पष्टता का कारण होते हैं, उन्हें तनाव के संगठनात्मक कारक कहा जाता है।

1. **कार्य अतिभार (Workload):–** शिक्षकों में तनाव का एक महत्वपूर्ण कारण कार्य अतिभार को भी माना जाता है, क्योंकि एक सीमा से अधिक कार्य व्यक्ति को चिड़चिड़ा एवं तनावग्रस्त बना देता है।
2. **शिक्षण व्यवसाय में निरन्तर होने वाले परिवर्तन (Changes in Profession) :– कोहेन (1991)** ने कहा है कि हर बदलाव तनाव का आधार होता है और यह अधिक बदलाव शिक्षण के व्यवसाय में अधिक होने से शिक्षकों के दिमाग में अति तनाव की स्थिति बनाता है।
3. **संस्थागत वातावरण में कार्य संतुष्टि (Job Satisfaction in Institutional Climate) :–** बोर्ग, एवं राइजिंग (1991) ने अपने एक शोध में पाया कि शिक्षकों के तनाव को बढ़ाने में विभिन्न प्रकार के पर्यावरणीय कारक जैसे :– छात्रों का दुर्व्यवहार, व्यावसायिक प्रशंसा का अभाव, खराब पारस्परिक सम्बन्ध, समय और संसाधनों की कमी आदि ने मुख्य रुप से योगदान दिया है।
4. **प्रशासनिक समस्यायें (Administrative Problems)** :– किंग एण्ड पियर्ट (1992) ने अपने एक अध्ययन में पाया कि उन विद्यालयों के शिक्षक कम तनाव में पाये गये जहाँ पर प्रबन्धन द्वारा विभिन्न प्रकार की अहम एवं निर्णायक परिस्थितियों में शिक्षकों का समर्थन किया गया।
5. **विद्यार्थियों का व्यवहार (Students Behaviour) :–** विल्किंसन (1988) ने हाई स्कूल के शिक्षकों पर उनके तनाव, तनाव से सम्बन्धित कारण, प्रभावों का अध्ययन किया। जिसमें उन्होनें पाया कि विद्यार्थियों में प्रेरणा की कमी को तनाव के प्रमुख संकेतक के रुप में पाया गया।

6. **अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध (Interpersonal Relations) :–** लैहमैन (2014) ने कार्यजनित तनाव के कारणों का अध्ययन[6] में पाया कि उनमें से आधे से ज्यादा लोगों ने यह पाया कि कार्यस्थल पर अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध कार्यजनित तनाव के कारणों में प्रमुख स्थान रखते हैं।

जनसाँख्यिकीय कारक (Demographic Variables)

1. **शिक्षकों की आयु (Age of Teachers) :–** शिक्षकों में सेरोस (1988) ने पाया के शिक्षकों की आयु और उनका अनुभव उनके तनाव से सम्बन्धित ज्ञान को बढ़ाने का काम करता है।
2. **लिंग (Gender) :–** अध्ययनों से यह पाया गया है कि पुरूष शिक्षकों में नौकरी के तनाव एवं सामाजिक तनाव में सकारात्मक सह–सम्बन्ध पाया जाता है, जबकि महिला शिक्षकों में यह पाया गया है कि पारिवारिक तनाव एवं सामाजिक तनाव में सकारात्मक सह–सम्बन्ध पाया जाता है ।
3. **शिक्षा (Education) :–** अन्सारी एवं सिंह (1991) ने अपने एक अध्ययन में पाया कि शैक्षणिक योग्यता एवं व्यावसायिक तनाव में सह–सम्बन्ध पाया जाता है।
4. **अनुभव (Experience) :–** अन्सारी एवं सिंह (1991) ने अपने अध्ययन में यह भी पाया कि एसोसिएट प्रोफेसर्स का तनाव उनके कुल अनुभव से पूरी तरह से सह–सम्बन्धित था एवं एक अन्य अध्ययन में यह भी पाया गया कि 10 वर्ष से कम शिक्षण अनुभव वाले शिक्षक 20 वर्ष या इससे अधिक शिक्षण अनुभव वाले शिक्षकों की तुलना में अधिक तनाव ग्रस्त पाये गये।
5. **भूमिका अस्पष्टता (Role Ambiguity) :–** हैवर्ड (1991) ने अपने एक अध्ययन में पाया कि भूमिका अस्पष्टता शिक्षकों में तनाव उत्पन्न करने वाले कारकों में प्रमुख स्थान पर है।

समस्या का महत्व (Importance of the Problem)

शिक्षक अपना कार्य कुशलतापूर्वक कर सकें, इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षकों के लिए बेहतरीन कार्यदशाएँ हों। उपयुक्त कार्यदशाओं एवं सेवा संतुष्टि के अभाव में अच्छे शिक्षकों की कार्यकुशलता भी प्रभावित होती है। शिक्षकों की कार्यकुशलता को प्रभावित करने वाले कारकों में एक प्रमुख कारक शिक्षकों की कार्यजनित दशाऐं हैं। अक्सर देखा जाता है कि शिक्षकों के कार्य आवंटन एवं प्रशासन सम्बन्धी नीतियों के लिए सरकारों के पास ठोस एवं पारदर्शी कार्ययोजना का अभाव होता है। शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के कार्य पक्षपातपूर्ण एवं अनिवार्य तरीके से आवंटित कर दिये जाते हैं, जिसके फलस्वरुप उनकी कार्यकुशलता प्रभावित होती है। वर्तमान समय में बहुधा यह देखने में आया है कि वर्तमान शिक्षक अपने मूल कार्य शिक्षण एवं अन्य कार्यों के मध्य सामंजस्य नहीं बैठा पा रहे हैं। जिससे उनकी मनःस्थिति में विभिन्न प्रकार के विकार उत्पन्न होते हैं। मनःस्थिति एवं परिस्थिति के मध्य असंतुलन एवं असामंजस्य के कारण शिक्षक विभिन्न प्रकार के तनावों से ग्रसित हो रहे हैं। जिसका सीधा–सीधा प्रभाव शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ रहा है। शिक्षकों में विभिन्न कारणों से उपजे तनाव से मन अशान्त, भावना अस्थिर एवं शरीर की अस्वस्थता जैसी विभिन्न प्रकार की स्थितियाँ पैदा हो रही हैं। जिनसे शिक्षक की कार्यक्षमता एवं विद्यार्थियों के साथ उसका व्यवहार पूरी तरह प्रभावित हो रहा है।

शोध का उद्देश्य

(1) उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में कार्यजनित तनाव का उनकी कार्यकुशलता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

[6] https://www.eurofound.europa.eu/publications/article/2014/personal-relations-at-work-no-1-cause-of-stress

शोध की परिकल्पना

(1) उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में कार्यजनित तनाव का उनकी कार्यकुशलता पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गयी।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में सीकर जिले के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में उच्च माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को लिया गया है। अतः उच्च माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षिकाऐं प्रस्तुत शोध की जनसंख्या होंगी।

न्यादर्श विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श के चयन हेतु सम्भाव्य न्यादर्श की साधारण अनियमित न्यादर्श विधि को अपनाया गया है। प्रस्तुत शोध में सीकर जिले में कार्यरत शिक्षकों की संख्या को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्ता ने अपने शोधकार्य के लिए न्यादर्श के रूप में 200 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं का चयन किया है।

शोधकार्य न्यादर्श के रूप में चयनित शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं का विवरण निम्न तालिका में दिया गया है:–

सारणी

कुल न्यादर्श – 200			
शहरी उच्च माध्यमिक विद्यालय		**ग्रामीण उच्च माध्यमिक विद्यालय**	
100 शिक्षक		**100 शिक्षक**	
(महिला)	**(पुरुष)**	**(महिला)**	**(पुरुष)**
50 शिक्षिका	**50 शिक्षक**	**50 शिक्षिका**	**50 शिक्षक**

- **शोध में प्रयुक्त स्वतन्त्र चर – कार्यजनित तनाव**
- **शोध में प्रयुक्त आश्रित चर – कार्यकुशलता**

उपकरण

प्रस्तावित शोध में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा।

- **शिक्षक कार्यजनित तनाव प्रभाव मापनी**

आंकड़ों का विश्लेषण :– प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग कर आंकड़ों को एकत्रित कर विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, पद विभेदन क्षमता, स्पीयरमैन कोटि अन्तर विधि से सहसम्बन्ध /वैधता गुणांक, अर्द्ध विच्छेद विधि से सम्पूर्ण परीक्षण की विश्वसनीयता, मानक त्रुटि, स्वतंत्रता अंश, टी–मान, क्रान्तिक अनुपात सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया जाएगा।

सारणी संख्या – 1.1

(मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा क्रान्तिक अनुपात का प्रदर्शन)

शिक्षक	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	अन्तर की मानक त्रुटि SE_D	मध्यमानों का अन्तर D	स्वतंत्रता के अंश df	क्रान्तिक अनुपात CR
शहरी	100	55.90	8.47	0.42	0.44	198	1.02
ग्रामीण	100	55.46	8.04				
'' 0.05 स्तर पर सार्थक							स्वीकृत

व्याख्या – स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्यजनित तनाव का उनकी कार्यकुशलता पर प्रभाव का मध्यमान क्रमशः 55.90 व 55.46 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 8.47 व 8.04 हैं। मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 0.42 है तथा मध्यमानों का अन्तर 0.44 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का क्रान्तिक अनुपात 1. 02 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 198 हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 से कम ही है, अतः दोनों समूहों में मध्यमान का सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना–1 को स्वीकृत किया जाता है।

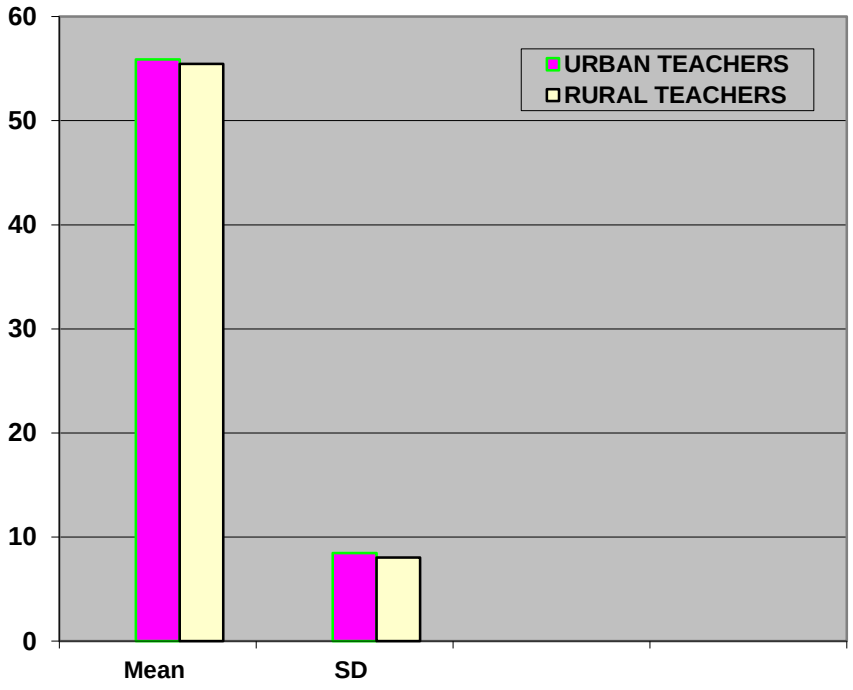

विश्लेषण – चूँकि उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्यजनित तनाव का उनकी कार्यकुशलता पर प्रभाव के प्राप्तांकों का मध्यमान (55.90) ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों प्राप्तांकों के मध्यमान (55.46) से अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में कार्यजनित तनाव का उनकी कार्यकुशलता पर प्रभाव ग्रामीण विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की तुलना में अधिक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची (Bibliography)

1. रुहेला,सत्यपाल (1998) — भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र, प्रकाशक – राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
2. अदावत, एस. ई. (1984) — "एनालिटिकल स्टडी ऑफ टीचर एज्यूकेशन इन इंडिया, अमिताभ प्रकाशन, इलाहाबाद
3. आर्गिल, एम. (1972) — "द साइकोलॉजी ऑफ इन्टरपर्सनल बिहेवियर" हारमंड्स प्रकाशन, आगरा
4. कपिल, एच. के. (1999) — "साँख्यिकी के मूल तत्व" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
5. जायसवाल, सीताराम (2007) — " शैक्षिक व व्यावसायिक निर्देशन" विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6. दास, आर. सी. (1995) — "शिक्षण प्रभावशीलता" नेशनल पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली
7. भटनागर, सुरेश (2003) — "शिक्षा मनोविज्ञान" आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ
8. भार्गव, महेश (1971) — "आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन" नवम् संस्करण, हरिप्रसाद भार्गव प्रकाशन, आगरा
9. शर्मा, ईश्वरचन्द्र (2005) — "शैक्षिक प्रबंध एवं प्रभावशाली अध्यापन" प्रतियोगिता विशेषांक, राजस्थान बोर्ड शिक्षण पत्रिका, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान (अजमेर)
10. शर्मा, आर. ए. (2010) — अध्यापक शिक्षा
11. राणा, किरण (2017) — "Comparative Study of Interaction Analysis and Classroom Behavior of Senior Secondary School Teachers with High and Low Teaching Competency" http://hdl.handle.net/10603/207824
12. सेंगर, ज्योति (2017, May/June) — "माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव का एक अध्ययन" Volume-2, Anveshana's International Journal of Research in Education, Literature, Psychology and Library sciences.
13. डॉ0 गुप्ता, शिप्रा (2017, June) — "शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्यदबाव के प्रभाव का अध्ययन" Volume-6, issue-6,Paripex – Indian Journal of Research.
14. शर्मा, ममता (2017, January) — "माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के समायोजन सम्बंधित समस्याओं का अध्ययन" Volume-7,Inspira- Journal of Modern Management & Enterpreneurship (JMME)
15. राखी (2014) — "Occupational Stress in School Teachers: A Study of Their Working Conditions, Motivation and Adjustment" http://hdl.handle.net/10603/206560
16. जयराज, एस0एस0 (2009) — "Occupational Stress Among The Teachers of The Higher secondary

Schoos in Madurai District, Tamil Nadu"

http://hdl.handle.net/10603/124802

17. कुमार, दीपक (2007) "माध्यमिक स्तर के अध्यापक एवं अध्यापिकाओं की व्यावसायिक संतुष्टि और मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन" आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

18. कुमार, राहुल (2006) "जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के द्वारा सेवारत प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन" आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय, गाँधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

Corresponding Author

*** अंशुल श्रीवास्तव,** *शोधार्थी (शिक्षा)*
डॉ0 विशाल उपाध्याय, *शोध निदेशक एवं प्राचार्य*
भारतीय विद्या मंदिर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय, बांसवाड़ा (राज.)
Email-anshulsrivastava299@gmail.com, Mob.- 9784311219